# वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

## जौनपुर, उत्तर प्रदेश

# दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत




www.vbspu.ac.in

RMJJ+7PR, Shahganj Road,
Siddikpur, Uttar Pradesh 222003



# श्रीमती आनंदीबेन पटेल

## माननीय कुलाधिपति एवं श्री राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

*"नशा केवल व्यक्ति के जीवन को नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है।"*

# दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत

**प्रकाशक :**

वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय

जौनपुर - 222003 ( उ०प्र० )

# वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर



वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय (पूर्व में पूर्वांचल विश्वविद्यालय) की स्थापना जौनपुर के लोगों के परिश्रम तथा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्व. वीर बहादुर सिंह के प्रयास के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित गजट संख्या 5005/15–10–87–15 (15)–86 टी.सी. दिनांक 28 सितम्बर 1987 के तहत 02 अक्टूबर 1987 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के पावन पर्व पर की गई। कालान्तर में पूर्वांचल विश्वविद्यालय का नाम स्वर्गीय वीर बहादुर सिंह की स्मृति में वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय रखा गया।

प्रारम्भ में विश्वविद्यालय का कार्यालय प्रथमतः टी.डी. कालेज जौनपुर के फार्म हाउस के भवन पीली कोठी में प्रारम्भ हुआ। उत्तर प्रदेश शासन ने विश्वविद्यालय हेतु भूमि अधिग्रहित करने के लिए कुल 85 लाख रूपये की धनराशि स्वीकृत की तथा अधिकारियों सहित कुल 67 पद स्वीकृत किये। शासन द्वारा सृजित पदों पर नियुक्तियां हुई और यहीं से विश्वविद्यालय की विकास यात्रा प्रारम्भ हुई। जिला प्रशासन ने जौनपुर शहर से लगभग 12 किमी. दूर जौनपुर शाहगंज मार्ग पर देवकली, जासोपुर ग्राम सभाओं की कुल 171.5 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराई।

वर्ष 1994 में विश्वविद्यालय ने अपने नवनिर्मित निजी प्रशासनिक भवन में कार्य करना प्रारम्भ किया और इसी के साथ ही विश्वविद्यालय का आवासीय स्वरूप विकसित होना प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में परिसर स्थित विभिन्न पाठ्यक्रमों में शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र–छात्राओं के लिए आधुनिक सुविधाओं से युक्त छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। अध्यापकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रहने के लिए फ्लैट्स तथा ट्रांजिट हॉस्टल की भी व्यवस्था है। इसके अलावा छात्र सुविधा केन्द्र, संगोष्ठी भवन, अतिथि गृह, शिक्षक अतिथि गृह, राष्ट्रीय सेवा योजना भवन, रोवर्स–रेंजर्स भवन हैं। इसके साथ ही विभिन्न संकायों के लिए अलग–अलग भवनों का निर्माण किया गया है जो अत्याधुनिक लैब, इण्टरनेट – वाईफाई एवं सी.सी. कैमरे से सुसज्जित हैं। इस वर्ष विष्वविद्यालय को नैक द्वारा A+ ग्रेड की प्राप्ति हुई।

विद्यार्थियों को शहर से दूर परिसर में उच्च गुणवत्ता से युक्त शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने के लिए विवेकानन्द केन्द्रीय पुस्तकालय संचालित है। इसमें परम्परागत पुस्तकालय सुविधा के अतिरिक्त इसका आधुनिकीकरण करके ई–लाइब्रेरी के तहत छात्रों को ई–जर्नल, ई–बुक की सुविधा उपलब्ध करायी गई है, इसके साथ ही एडुसैट व्यवस्था के अन्तर्गत छात्रों को इग्नू, यूजीसी, एआईसीटीई वर्चुअल शिक्षण कार्यक्रम की सुविधा प्रदान की गई है। परिसर के छात्रों को विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के योग्य बनाने हेतु आधुनिक खेल सुविधा से युक्त एकलव्य स्टेडियम का भी निर्माण किया गया है। विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विश्वविद्यालय का नाम अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर पहुँचाया है और पिछले पांच वर्षों से लगातार उत्तर भारत के विश्वविद्यालय एवं उत्तर प्रदेश में शीर्ष स्थान पर है। राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा विभिन्न जनपदों में असहाय लोगों के लिए बापू बाजार का आयोजन किया जाता है। इंजीनियरिंग संस्थान के विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए विश्वविद्यालय के पड़ोसी गांव देवकली में आधुनिक संसाधनविहीन बच्चों को निःशुल्क कोचिंग पढ़ायी जाती है।

वर्तमान में पूर्वान्चल के दो जनपदों के 589 महाविद्यालय विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं। विश्वविद्यालय परिसर में स्नातक स्तर पर इंजीनियरिंग डिप्लोमा इन मैकेनिकल इंजीनियरिंग (प्रोडक्शन) एवं बी फार्मा की शिक्षा दी जा रही है। इसके अतिरिक्त स्नातकोत्तर स्तर पर एम. टेक.,एम.सी.ए., एम.बी.ए., एम.बी.ई., एग्री बिजनेस, ई–कामर्स, एम.एफ.सी., एम.एच.आर. डी., मास कम्यूनिकेशन, व्यावहारिक मनोविज्ञान, एम.एस.सी. बायोटेक्नॉलाजी, पर्यावरण विज्ञान, अप्लाइड माइक्रो बायोलॉजी, अप्लाइड बायोकेमेस्ट्री विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है। विश्वविद्यालय परिसर में प्रो० राजेंद्र सिंह (रज्जू भैया) भौतिकी एवं शोध संस्थान में एम. एस.सी–फिजिक्स, केमिस्ट्री, मैथमेटिक्स एवं एप्लाइड जियोलॉजी पाठ्यक्रम संचालित है। संस्थान में दो शोध केंद्र नैनो साइंस एंड टेक्नोलॉजी व गैर परंपरागत ऊर्जा शोध केंद्र संचालित हो रहे है। बी.ए. एल.एल.बी (पांच वर्षीय इंटीग्रेटेड ) पाठ्यक्रम प्रारंभ है। बी.कॉम. (आनर्स), बी.सी.ए., बी.एस.सी. (गणित, भौतिकी, भूगर्भ विज्ञान), बी.एस.सी. (जंतु, वनस्पति, रसायन विज्ञान, पर्यावरण एवं सूक्ष्म जीव विज्ञान), बी.एस.सी (आनर्स) बायोटेक्नोलॉजी एवं बी.एस.सी. (आनर्स) पर्यावरण विज्ञान पाठ्यक्रमों की शुरुआत भी विगत वर्ष से हुई है। परिसर में डी. फार्मा एवं बी.ए. पाठ्यक्रम भी संचालित हो रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पाठ्यक्रम के अंतर्गत एक वर्षीय वैदिक ज्योतिष डिप्लोमा पाठ्यक्रम, एक वर्षीय वैदिक कर्मकांड डिप्लोमा पाठ्यक्रम एवं एक वर्षीय वैदिक वास्तु शास्त्र डिप्लोमा पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय परिसर में शुरू किया जा रहा है। यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

# उद्‌बोधन

## प्रो० वन्दना सिंह

### कुलपति



प्रिय विद्यार्थियों,

आज आप सभी को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। हम यहाँ दो बड़ी समस्याओं के बारे में बात करने आए हैं जो हमारे जीवन और हमारे आस–पास की दुनिया को प्रभावित कर सकती हैं। दहेज प्रथा और नशीली दवाओं की लत। यह सोचना ज़रूरी है कि हम इन मुद्दों को हल करने में कैसे मदद कर सकते हैं। मुझे आप छात्रों पर बहुत गर्व है जो दुनिया को एक बेहतर जगह बनाना चाहते हैं। हमारी संरक्षक मा0 कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी की सोच है कि एक स्वच्छ समाज का निमार्ण हो। हमारे विद्यार्थी सामाजिक कुरीतियों से दूर रहें और उसके खिलाफ आवाज उठाते रहें।

प्रिय विद्यार्थियों, सबसे पहले हम बात करें दहेज प्रथा की। यह हमारे समाज में एक ऐसी कुरीति बन चुकी है, जो न केवल महिलाओं के लिए अपमानजनक है, बल्कि समग्र समाज के लिए हानिकारक भी है। यह एक गंभीर अपराध है, जो न केवल हमारे सामाजिक ताने–बाने को कमजोर करता है, बल्कि हमारे मानवीय मूल्यों की भी घोर अवहेलना करता है।

दहेज प्रथा एक मानसिकता है कि एक महिला के विवाह के समय कुछ आर्थिक या भौतिक संपत्ति देना उसकी या उसके परिवार की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है। यह एक भ्रामक धारणा है, जिसका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस कुरीति का सबसे बड़ा नुकसान महिलाओं को होता है, क्योंकि उन्हें दहेज की मांगों के कारण मानसिक और शारीरिक यातनाओं से गुजरना पड़ता है, और कई मामलों में तो यह अपराध की ओर भी बढ़ जाता है। दहेज प्रथा के चलते कई परिवारों की आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है, और इससे समाज में असंतोष और हिंसा फैलती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि आप इस विचारधारा को अपने जीवन से बाहर निकालने में सक्षम होंगे। यह एक मानसिकता का बदलाव है, और आप उस बदलाव के वाहक बन सकते हैं। किसी भी विवाह में दहेज का स्थान नहीं होना चाहिए, बल्कि उस रिश्ते में एक दूसरे के प्रति सम्मान, विश्वास और प्रेम का होना चाहिए। हमें यह समझना होगा कि दहेज न केवल एक कुरीति है, बल्कि यह हमारी सामाजिक असमानता को बढ़ाता है।

नशे की लत की समस्या हमारे युवाओं को प्रभावित कर रही है। हम शराब, तंबाकू, नशीली दवाओं और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन में दैनिक वृद्धि देख रहे हैं। युवा पीढ़ी, जो हमारे देश का भविष्य है, आज इन लतों में गहराई से फंसी हुई है। मादक द्रव्यों का सेवन न केवल किसी व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि पूरे परिवार और समाज को भी नुकसान पहुंचाता है।

नशे की लत एक व्यक्ति को अपनी शिक्षा, करियर और व्यक्तिगत जीवन में विफल करती है। यह न सिर्फ उस व्यक्ति की क्षमता को कमजोर करता है, बल्कि समाज में भी बुरा प्रभाव डालता है। युवाओं में नशे की लत और अव्यवस्थित शिक्षा के कारण उनका समाज में योगदान भी कम हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप हमें एक दिशाहीन, असफल और असफल समाज का सामना करना पड़ता है।

प्रिय विद्यार्थियों, यह समय है कि हम अपने समाज में बदलाव लाने के लिए हर संभव कदम उठाएँ। दहेज और नशा जैसे सामाजिक दंशों से निपटने के लिए हमारी जागरूकता, शिक्षा, और व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता है। आप सभी युवा पीढ़ी को अपने आचार–व्यवहार और सोच में बदलाव लाकर एक बेहतर, खुशहाल और समृद्ध समाज की दिशा में योगदान देना है।

मैं विश्वास करती हूँ कि आप सब इस बदलाव के अग्रणी बनेंगे, और हम सभी मिलकर एक दहेज मुक्त और नशा मुक्त भारत का निर्माण करेंगे।

धन्यवाद।

07 मार्च, 2025

**प्रो० वन्दना सिंह**
कुलपति

# "दहेज मुक्त भारत एवं नशा मुक्त भारत"

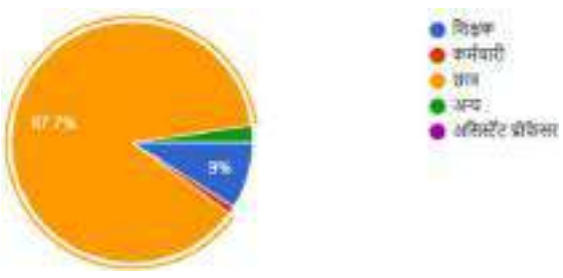
प्रदेश की मा0 राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय की माननीया कुलाधिपति महोदया श्रीमती आनंदीबेन पटेल जी की प्रेरणा से सामाजिक कुरीतियों के अन्तर्गत दहेज मुक्त भारत एवं नशा मुक्त भारत की प्रतिज्ञा कार्यक्रम दिनांक 07.03.2025 को अपरान्ह 12:15 बजे से विश्वविद्यालय एवं उनसे सम्बद्ध समस्त महाविद्यालयों में एक साथ आयोजित किये जाने के निर्देश दिये गये थे। इसमें "दहेज मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा" एवं "नशा मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा" दोनों शपथ कार्यक्रम दिनांक 07.03.2025 को निर्धारित समय अपराह्न 12:15 बजे से विश्वविद्यालयों एवं उनसे सम्बद्ध समस्त महाविद्यालयों तथा गोद लिये गावों में एक साथ आयोजित किया जाना था।

उपरोक्त कार्यक्रमों के सफल आयोजन हेतु कुलपति प्रो0 वन्दना सिंह के आदेश दिनांक 06.03.2025 द्वारा चयनित महाविद्यालयों के लिए समन्वयक/पर्यवेक्षक नामित किया गया। इस कार्यक्रम के सफल संचालन हेतु महिला अध्ययन केंद्र की प्रभारी डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव को नोडल अधिकारी नामित किया गया।

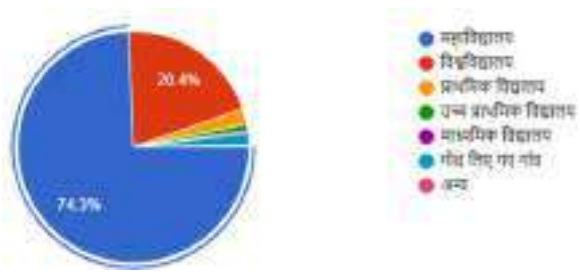
| महाविद्यालय/कार्यक्रम स्थल का नाम | पर्यवेक्षक का नाम |
|---|---|
| तिलकधारी पी०जी० कालेज, जौनपुर | प्रो० मानस पाण्डेय, एम०बी०ई० विभाग<br>श्री अजीत प्रताप सिंह, उप कुलसचिव |
| गुलाबी देवी पी०जी० कालेज, सिद्दीकपुर, जौनपुर | प्रो० मनोज मिश्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग |
| आर०एस०के०डी० पी०जी० कालेज, जौनपुर | प्रो० अशोक कुमार श्रीवास्तव,इंजीनियरिंग संस्थान<br>डॉ० अवधेश कुमार मौर्य, वनस्पति विज्ञान विभाग |
| सहकारी पी०जी० कालेज, मिहरावॉ, जौनपुर | प्रो० अविनाश डी पाथर्डीकर, एच०आर०डी० विभाग |
| मो० हसन पी०जी० कालेज, जौनपुर | प्रो० अजय प्रताप सिंह, व्यावहारिक मनोविज्ञान विभाग |
| स्व० नूरूद्दीन खॉ एडवोकेट गर्ल्स पी०जी० कालेज, अफलेपुर, मल्हनी, जौनपुर | प्रो० मुराद अली, एम०बी०ए० विभाग |
| तिलकधारी महिला महाविद्यालय, जौनपुर | प्रो0 राजेश शर्मा, बायोटेक्नोलॉजी विभाग<br>श्रीमती बविता सिंह, उप कुलसचिव |

"दहेज मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा" एवं "नशा मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा" दोनों शपथ कार्यक्रम के लिए गूगल फॉर्म के माध्यम से 11,687 प्रतिभागियों का पंजीकरण किया गया. जिसमें महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, गोद लिए गए गांव एवं अन्य लोग शामिल रहे।

पद




महाविद्यालय/विश्वविद्यालय/गोद लिए गए गाँव/अन्य




विश्वविद्यालय द्वारा नामित पर पर्यवेक्षकों ने सफलतापूर्वक कार्यकर्मों को संपन्न कराया। विश्वविद्यालय के मुक्तांगन परिसर में दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए कुलपति प्रो. वंदना सिंह ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रतिज्ञा दिलाई।

## दहेज मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि विवाह के पवित्र बन्धन को दहेज रूपी सौदे से मुक्त रखूंगा। स्वयं दहेज न लूंगा और न ही दूंगा। दहेज लेने वालों और देने वालों का विरोध करूंगा और लोगों को इसके दुष्परिणामों से अवगत कराऊंगा। अपने परिवार, मित्रों और समुदाय को दहेज प्रथा के खिलाफ जागरूक करूंगा, पारिवारिक सम्बन्धों की मधुरता के प्रति संवेदनशील होने का दायित्वबोध कराऊंगा।

अपने जीवन में पूरी निष्ठा और ईमानदारी से भारत को एक दहेज मुक्त, समतामूलक, जिम्मेदार और स्वस्थ विचारों का पोषक समाज बनाने के लिए प्रतिबद्ध रहूंगा।

जय हिंद! जय भारत!!

## नशा मुक्त भारत के लिए प्रतिज्ञा

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि किसी भी प्रकार के नशे अथवा मादक पदार्थ का सेवन न स्वयं करूंगा, न ही अन्य को प्रोत्साहित करूंगा। नशे से शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दुष्प्रभावों के बारे में परिवार मित्र, समाज व जन–जन को जागरूक करूंगा। किसी भी प्रकार के नशे के व्यापार की जानकारी मिलने पर मैं प्रशासन को इसकी सूचना दूंगा और कानूनी कार्यवाही का समर्थन करुंगा।

मेरा भारत देश एक नशा मुक्त, स्वस्थ, प्रगतिशील व समृद्ध राष्ट्र कहलाए इसके लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध रहूंगा।

जय हिंद! जय भारत!!

### ''दहेज मुक्त भारत'' एवं ''नशा मुक्त भारत'' के लिए प्रतिज्ञा के प्रतिभागियों का विवरण

| क्रम संख्या | मोड | विश्वविद्यालय स्तर पर प्रतिभागियों की संख्या | महाविद्यालय स्तर पर प्रतिभागियों की संख्या | गोद लिए गए गाँव में प्रतिभागियों की संख्या | अन्य प्रतिभागियों की संख्या | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ऑनलाइन | 2533 | 8498 | 619 | 37 | 11687 |
| 2 | ऑफलाइन | 245 | 14340 | 780 | ----- | 15365 |
| | योग | 2778 | 22,838 | 1399 | 37 | 27,052 |



विश्वविद्यालय के मुक्तांगन परिसर में दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों को प्रतिज्ञा दिलातीं कुलपति प्रो. वन्दना सिंह



प्रतिज्ञा कार्यक्रम में प्रतिज्ञा लेते विद्यार्थी



नूरुद्दीन खाँ गर्ल्स पी.जी. कालेज, जौनपुर में शपथ कार्यक्रम




टीडी कॉलेज, जौनपुर में शपथ कार्यक्रम



प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भइया) संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में शपथ कार्यक्रम



आई.बी.एम. संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में शपथ कार्यक्रम




विश्वेश्वरैया सभागार, विश्वविद्यालय परिसर में शपथ कार्यक्रम




इंजीनियरिंग संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में शपथ कार्यक्रम




**मोहम्मद हसन पीजी कॉलेज , जौनपुर में शपथ कार्यक्रम**



**लालजी रामराज यादव पीजी कॉलेज, जौनपुर में शपथ कार्यक्रम**




राष्ट्रीय पी.जी. कालेज, सुजानगंज, जौनपुर में शपथ कार्यक्रम




फार्मेसी संस्थान, विश्वविद्यालय परिसर में शपथ कार्यक्रम



गोपीनाथ पीजी कॉलेज, देवली, सलामतपुर, ग़ाज़ीपुर में शपथ कार्यक्रम



विश्वविद्यालय परिसर के मानव संसाधन विभाग में शपथ कार्यक्रम



# आभार

**"दहेज मुक्त भारत तथा नशा मुक्त भारत"** हेतु मा0 कुलाधिपति जी द्वारा दिए गए निर्देश के क्रम में विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं द्वारा एक ही समय पर एक साथ समस्त छात्र–छात्राओं, अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों गोद लिए गए गांव के समस्त नागरिकों द्वारा दहेज न लेने एवं ना देने तथा नशा न करने का शपथ लिया गया। इसके लिए सर्वप्रथम मै आभार प्रकट करना चाहूंगी माननीय कुलाधिपति जी के प्रति जिनके निर्देश के क्रम में समय–समय पर समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को मंच प्रदान किया जा रहा है तथा जन जागरूकता फैलायी जा रही है, चाहे स्वच्छता हो, बाल विवाह जैसा गंभीर विषय हो या फिर दहेज़ प्रथा एवं नशा उन्मूलन आदि जैसे तमाम विषयों पर वाद–विवाद प्रतियोगिता, नाट्य मंचन जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाने के निर्देश मिलते रहते है। ऐसे अभिभावक रूपी मा0 कुलाधिपति श्रीमती आनंदी बेन पटेल जी के प्रति कोटिशः आभार।

आभार की अगली कड़ी में मैं मा0 कुलपति प्रो0 वन्दना सिंह जी के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगी जिन्होंने मुझ पर विश्वास जताते हुए मुझे "दहेज मुक्त भारत तथा नशा मुक्त भारत" का नोडल अधिकारी नामित किया, माननीय कुलपति जी के कुशल मार्गदर्शन का ही प्रतिफल है कि इतनी बड़ी संख्या में लोगों ने पूरे उत्साह के साथ शपथ लिया।

आभार के इसी क्रम में मैं विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री महेंद्र कुमार के प्रति विशेष आभार प्रकट करना चाहूंगी जिनके उत्साह पूर्ण सहयोग के बगैर कार्यक्रम सफल ही नहीं हो सकता था। आभार के अगली कड़ी में परीक्षा नियंत्रक डॉ० विनोद कुमार सिंह, डॉ० राज बहादुर यादव, डॉ० शशिकांत यादव, डॉ० राकेश कुमार यादव चीफ वार्डेन प्रो० सौरभ पाल, डॉ० दिग्विजय सिंह राठौर, डॉ0 अनुराग मिश्र एवं समस्त सम्मानित आचार्य एवं प्रशासनिक अधिकारी जिन्होंने पर्यवेक्षक की भूमिका में रह कर महाविद्यालयों में जाकर कार्यक्रम सफल कराया, समस्त प्रशासनिक कर्मचारी एवं महाविद्यालयों के प्रबंधक तथा प्राचार्य जिनके सहयोग ने कार्यक्रम को सिर्फ कार्यक्रम ही नहीं बल्कि उत्सव का स्वरूप दे दिया।

धन्यवाद !

**डॉ. जान्हवी श्रीवास्तव**
नोडल अधिकारी
दहेज मुक्त एवं नशा मुक्त भारत

# जौनपुर : एक समृद्ध विरासत



विभिन्न संस्कृतियों की बाकी–झाँकी का साक्षी रहा जनपद जौनपुर अपनी ऐतिहासिकता को बहुत अतीत तक समेटे हुए है। सदानीरा गोमती के तट पर बसा यह शहर एक परम्परा के अनुसार महर्षि यमदग्नि की तपोस्थली रहा है जिस कारण इसका प्रारंभिक नाम यमदग्निपुर पड़ा तथा कालान्तर में यमदग्निपुर ही जौनपुर के रूप में परिवर्तित हो गया। कतिपय विद्वानों ने इस धारणा पर भी बल दिया है कि यहाँ प्राचीन भारत में यवनों का आधिपत्य रहा है जिस कारण इसका नाम प्रारम्भिक दौर में यवनपुर से कालान्तर में जौनपुर हो गया। जौनपुर की अधिष्ठात्री देवी माँ शीतला चौकियाँ, शक्ति उपासना की केन्द्र है। शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता–शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः का जयकारा जनपद वासियों को अनिष्टकारी व्याधियों एवं दुर्घटनाओं से सदा रक्षा करता है।



मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोतों ने जौनपुर की स्थापना का श्रेय फिरोजशाह तुगलक को दिया है, जिसने अपने भाई मुहम्मद बिन तुगलक (जूना खां) की स्मृति में इस नगर को बसाया और इसका नामकरण भी उसके नाम पर किया। फिरोजशाह तुगलक ने जौनपुर की स्थापना 1359 ई. में की तथा 1360 ई. में जौनपुर किले की नींव रखी। जौनपुर सल्तनत वर्ष 1394–1479 ई. तक उत्तर भारत की एक स्वतंत्र राजधानी रही जिसका शासन शर्की सल्तनत द्वारा संचालित था। लेकिन एक खास बात यह है कि जौनपुर राज्य का संस्थापक मलिक सरदार (सरवर) फिरोज शाह तुगलक के पुत्र सुलतान मुहम्मद का दास था जो अपनी योग्यता से 1389 ई. में वजीर बना। सुलतान महमूद ने उसे मलिक–उस–शर्क की उपाधि से नवाजा था। 1399 ई. में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके पद के कारण ही उसका वंश शर्की–वंश कहलाया। ज्ञातव्य है कि उसको कोई संतान नहीं थी, उसके बाद उसका गोद लिया हुआ पुत्र मुबारक शाह गद्दी पर बैठा था। 1402 ई. में मुबारक शाह की मृत्यु हो गयी। इसके बाद उसका भाई इब्राहिमशाह शर्की जौनपुर राज सिंहासन पर बैठा। इब्राहिम शाह के बाद उसका पुत्र महमूदशाह फिर हुसैन शाह तथा अन्ततः जौनपुर 1479 ई. के बाद दिल्ली सल्तनत का भाग बन गया।



जौनपुर में सरवर से लेकर शर्की बंधुओं ने 75 वर्षों तक स्वतंत्र राज किया। इब्राहिम शाह शर्की (1402 ई.–1440 ई.) के समय में जौनपुर सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उपलब्धि हासिल कर चुका था। उसके दरबार में बहुत सारे विद्वान थे जिन पर उसकी राजकृपा रहती थी। उसके राज–काल में अनेक ग्रंथों की रचना की गयी। तत्कालीन समय में जौनपुर शिक्षा का बहुत बडा केंद्र था। यह भी कहा जाता है कि इब्राहिम शाह शर्की के समय में ईरान से 1000 के लगभग आलिम (विद्वान) आये थे जिन्होंने पूरे भारत में जौनपुर को शिक्षा का बहुत बड़ा केंद्र बना दिया था। इसी कारण जौनपुर को 'शीराज–ए–हिंद' कहा गया। शीराज का तात्पर्य श्रेष्ठता से होता है। उसी समय जौनपुर में कला–स्थापत्य की एक नई शैली का जन्म हुआ, जिसे जौनपुर अथवा शर्की शैली कहा गया। कला–स्थापत्य की इस शैली का निदर्शन यहाँ पर आज भी अटाला मस्जिद में किया जा सकता है। अटाला मस्जिद की आधारशिला फिरोजशाह तुगलक द्वारा 1376 में की गयी जिसे 1408 में इब्राहिम शाह ने पूरा किया।

जौनपुर में गोमती नदी के शाही पुल का निर्माण कार्य मुगल बादशाह अकबर ने 1564 ई. में प्रारंभ करवाया जो 1569 ई. में बनकर तैयार हुआ। यह शाही पुल अकबर के सूबेदार मुनीम खाँ के निरीक्षण में बना। शर्की सुल्तानों ने जौनपुर में कई सुन्दर भवन, एक किला, मकबरा तथा मस्जिदें बनवाई। जौनपुर की जामा मस्जिद को इब्राहिम शाह ने 1438 ई. में बनवाना प्रारंभ किया था और इसे 1442 ई. में इसकी बेगम राजीबीबी ने पूरा करवाया। 1447 ई. में चार अंगुल मस्जिद को सुल्तान इब्राहिम के अमीर खालिस खाँ ने बनवाया। जौनपुर की सभी मस्जिदों का वास्तु प्रायः एक जैसा है। शेरशाह सूरी की सारी शिक्षा–दीक्षा जौनपुर में हुई। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और 'खयाल' के विकास में हुसैन शाह (1458–1479 ई.) का अपना योगदान रहा। इस दौरान कई रागों की रचना की गयी जिसमें प्रमुख हैं 'मल्हार–स्याम', 'गौर–स्याम', 'भोपाल–स्याम', 'जौनपुरी बसन्त', 'हुसेनी' या 'जौनपुरी असावरी' जिसे राग जौनपुरी कहा जाता है।



भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में जनपद के अमर शहीदों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपना जीवन बलिदान कर दिया। आज भी जनपद के विभिन्न स्थानों पर स्थापित शहीद स्तम्भ उनके बलिदान की याद दिलाते हैं। यहाँ के लोगों ने साहित्य, प्रशासनिक सेवा और विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में पूरी दुनिया में जनपद का नाम रोशन किया है। इसकी निरन्तरता अद्यतन बनी हुई है।

# कुलगीत

वीर बहादुर सिंह विश्वविद्यालय का हरितांचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
पूर्व दिशा का ताज रहा है,
"भारत का शीराज रहा है,
यह यमदग्नि-यजन की बेदी यह "कुतबन" का मादल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
दो धर्मों की मिलन-धुरी यह,
राग सलोना "जौनपुरी" यह,
संघर्षों की झंझर में झंकृत जिसके जीवन-पल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नये सृजन की सजी आरती,
उतरी वीणा लिये भारती,
नव-जागरण-थाल में अर्पित यह पावन तुलसी-दल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
कला-शिल्प-विज्ञान कलेवर,
छलकाये प्रकाश के निर्झर,
धेनुमती-तमसा-गंगा का यह पावन क्रीड़ास्थल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।
नीति हमारी सरल-तरल हो,
जिसमें जन का क्षेम-कुशल हो,
गौतम-कपिल-कणाद-पंतजलि हो आदर्श अचंचल।
जय-जय-जय "पूरब की आत्मा," जय-जय-जय "पूर्वाञ्चल"।।

